एपिसोड–16 वन्यजीव संरक्षण

आलेख डा. एम.ए. हक

(कॉल बेल बजने की आवाज, कई बार कॉल बेल बजती है। दरवाजा खोलने की आवाज।)

एक पुरूष की आवाज – अरे भाई! दरवाजा खोलने में इतनी देर क्यों लगा देते हो तुम लोग

एक महिला की आवाज – मैं रसोई में थी। इन दोनों के लिए खाना तैयार कर रही थी, सुबह साथ देने के लिए।

पुरूष की आवाज में आश्चर्य का भाव – सुबह साथ देने के लिए! कहां जा रहे हैं यह लोग क्या स्कूल की ओर से पिकनिक का कार्यक्रम है

महिला – नहीं, कल यह लोग निशान्त के साथ जिम कार्बेट नेशनल पार्क जा रहे हैं। सुबह सवेरे निकलना है।

पुरूष की आवाज – निशान्त के साथ निशान्त कब आया है

महिला – आज शाम को। उसे जिम कार्बेट जाना है किसी सरकारी काम से। सो उसने सोचा कि इन दोनों को साथ लेता जाए। यह दोनों वहाँ घूम लेंगे।

पुरूष – यह दोनों हैं कहां

महिला– अन्दर अपने कमरे में सामान ठीक कर रहे हैं। बहुत खुश हैं दोनों। काफी लंबे समय के बाद कहीं बाहर जाने का मौका मिल रहा है। उन्हें तो शायद पता भी नहीं चला कि आप आ गए हैं ऑपिफस से।

(उसी समय दो लोगों के कमरे में प्रवेश करने की आवाज एक लड़की तथा एक लड़का। नोनों किसी बात पर बहस कर रहे हैं।)

लड़का – मम्मी, देखिए ना, दीदी मुझे अपना टेप रिकार्डर नहीं रखने दे रही है साथ में ले जाने को।

महिला – क्या बात है मेघा, क्यों मना कर रही हो प्रयास को टेप रिकार्डर ले जाने के लिए।

लड़की – मम्मी, बात यह है कि National Park तथा Wildlife Sancturary में शोर करना बिल्कुल मना होता है। अगर यह अपने साथ टेप रिकॉर्डर लेकर जाएगा तो जरूर उसे बजाएगा। क्या ऐसा करना सही होगा

लड़का – मैं केवल गेस्ट हाउस में उसे बजाऊँगा। जंगल में जाते समय उसे गेस्ट हाउस में ही छोड़ दूँगा।

(उसी समय दरवाजा खुलने की आवाज। लडका और लडकी एक साथ बोलते हैं।)

पापा, आप कब आए

पापा – मुझे आए तो काफी समय हो गया है। तुम लोग तो कमरे में बन्द थे। तुम्हें तो घंटी की आवाष भी नहीं सुनाई दी थी। समस्या क्या है। तुम लोग क्यों झगड़ रहे हो

लड़की – पापा मैं प्रयास को मना कर रही हूँ कि वह अपने साथ टेप रिकॉर्डर न ले जाए। परन्तु यह जिाद कर रहा है।

पापा – मेध ठीक ही कह रही है। वहां तुम लोग तो दिनभर घूमते रहोगे। समय कब मिलेगा टेप रिकार्डर सुनने का। वैसे भी जंगल व नेशनल पार्क में रेडियो तथा टेप रिकॉर्डर इत्यादि नही बजाना चाहिए।

लड़की – यही तो मैं कह रही हूँ। सिपर्फ दो दिन तो हमें वहां रहना है। इतना समय कहां मिलेगा कि टेप–रिकॉर्डर बजाया जाए। मैं तो दिन भर घूमूंगी। कभी हाथी पर, कभी जीप पर और जो समय बचेगा वह मैं मचान पर बिताऊँगी। बड़ा मजा आएगा।

(कॉल बेल की आवाज । मेध भाग कर जाती है। दरवाजा खुलने की आवाज।)

लड़की – चाचा जी, हम लोगों ने तैयारी पूरी कर ली है। कपड़े वगैरहा सूटकेस में रख लिए हैं।

पुरूष की आवाज – प्रणाम भैया।

पापा – खुश रहो। जिम कार्बेट कैसे जाना हो रहा है

पुरूष की आवाज – वहां एक वर्कशाप आयोजित होने जा रही है। National Parks पर।

लड़की – चाचा के तो मजे हैं जब देखो घूमते रहते हैं।

पापा – और साथ में तुम दोनों को भी घुमाते हैं। भई, निशान्त ने आइ. एफ. एस. की परीक्षा पास करने के लिए मेहनत भी तो बहुत की थी। तुम दोनों भी आइ. एफ. एस. में ही चले जाना और जंगल–जंगल घूमते रहना।

(सब हंसते हैं।)

मम्मी – अच्छा अब चाचा को मुँह–हाथ तो धेने दो। चाय तो पीने दो। प्रयास, तुम चाचा के लिए तौलिया रखो बाथरूम में।

(चाय के कप रखने की आवाजें आती हैं।)

मम्मी – निशान्त, आओ चाय तैयार है। ठंडी हो जाएगी।

(निशान्त के आने की आवाज ।।)

निशान्त – अरे वाह! भाभी आपने तो पकौड़े भी बना लिए। मजा आ गया।

मम्मी – पकौड़े मेध ने बनाए हैं। उसे पता है तुम्हें पकौड़े पसन्द हैं।

पापा – सुबह क्या बहुत जल्दी निकलोगे

निशान्त – हाँ भैया। दोपहर तक पहुँच जाएँगे तो ठीक रहेगा। शाम के समय थोड़ा इन लोगों को घूमने का मौका मिल जाएगा। अगले दिन तो मैं वर्कशाप में लग जाऊँगा।

प्रयास – फिर हम लोगों का क्या होगा हम लोग क्या करेंगे

पापा – तुम लोग गेस्ट हाउस में आराम करना। कॉमिक पढ़ना, और क्या।

(सब हँसते हैं।)

प्रयास – मैं क्या वहाँ कॉमिक पढ़ने जा रहा हूँ

निशान्त – अरे भाई, परेशान होने की जरूरत नहीं है। मैंने पहले ही वहां लोगों को बता दिया है कि मेरे साथ दो शेर आ रहे हैं। उनको जंगल दिखाने का पूरा इंतजाम करना है और उनके भाई बन्धुओं से भी मिलाना है।

(सब हँसते हैं।)

मेधा – अरे बुद्धु चाचा अपना काम करेंगे और हम लोग जंगल की सैर करेंगे। आखिर हम लोग श्री निशांत शर्मा, आइ. एफ. एस. के सगे संबंधी हैं।

(सब हँसते हैं।)

निशान्त – बिल्कुल ठीक। वैसे सुबह–सुबह तो मैं भी तुम लोगों के साथ जाऊँगा। वर्कशाप तो दस बजे शुरू होगी। अच्छा यह बताओ, तुम लोगों ने वह किताब पढ़ी कि नहीं

प्रयास – कौन सी किताब

निशान्त – वही किताब जो मैंने पिछली बार तुम लोगों को दी थी, 'भारत की जैव सम्पदा' के बारे में।

मेघा तथा प्रयास (एक साथ) – जी, हां। हमने पढ़ ली थी। बहुत बढ़िया किताब थी। देश में पाए जाने वाले पशु–पक्षियों तथा पेड़–पौधें, सभी के बारे में बहुत अच्छी जानकारी है उस किताब में।

मेधा – ऐसी बहुत सी चीजों के बारे में हमें पता चला जो हम बिल्कुल नहीं जानते थे।

निशान्त – चलो अच्छा है। जिम कार्बेट में तुम लोगों को ऐसा बहुत कुछ देखने को मिलेगा जो अब तक केवल किताबों में तुमने पढ़ा है।

मम्मी – अच्छा अब ऐसा करो कि अपना सामान ठीक कर लो फिर खाना खाकर जल्दी सो जाना। सुबह जल्दी उठना पड़ेगा।

प्रयास – सो जाएंगे न। इतनी जल्दी क्या है। अभी थोड़ा चाचा जी से बातें करेंगे।

मम्मी – अरे! चाचा जी के साथ तो तुम लोग तीन दिन रहोगे। वहाँ खूब बाते करना। अभी उन्हें पापा से भी तो बात करने दो।

मेधा – हां प्रयास, मम्मी ठीक कह रही हैं।

(कुर्सियों के खिसकने की आवाजा.....)

मेधा – पापा–मम्मी, तो हम चलें।

पापा – हां बैठो गाड़ी में, देर हो रही है। निशान्त कहां है

प्रयास – नशान्त, ठीक है चलो तुम लोग। वापसी कब है तुम लोगों की

निशान्त – शनिवार या इतवार को आ जाएंगे। अच्छा, भाभी, प्रणाम। प्रणाम भैया।

पापा–मम्मी (एक साथ) – खुश रहो। सकुशल जाओ और सकुशल वापस आओ। पहुँच कर पफोन कर देना।

(गाड़ी का दरवाजा बन्द होता है। गाड़ी के चलने की आवाष।)

प्रयास – चाचा जी, जिम कार्बेट नेशनल पार्क के बारे में इतनी चर्चा क्यों होती है

निशान्त – बात यह है कि जिम कार्बेट पूरे एशिया में सबसे पुराना नेशनल पार्क है और यह भारत का सबसे पहला टाईगर रिषर्व भी है। इस नेशनल पार्क के महत्वपूर्ण होने का यह भी कारण है कि यह दो पहाड़ी श्रंखला अर्थात् गढ़वाल तथा कुमाऊँ पहाड़ों के संगम पर स्थित है। इसलिए जिम कार्बेट पार्क में इन दोनों क्षेत्राों में पाए जाने वाले पेड़–पौधे तथा पशु–पक्षी मिलते हैं।

मेधा – चाचा जी, यह भी तो है कि प्रसिद्ध शिकारी जिम कार्बेट इसी जगह रहते थे।

निशान्त – हां, बिल्कुल सही कहा तुमने।

प्रयास – चाचा जी, एक बात समझ में नहीं आती कि किसी शिकारी को इतना महत्व क्यों दिया गया

निशान्त – वह कोई साधरण शिकारी नहीं थे। वह उन जानवरों का शिकार करते थे जो आदमखोर हो जाते थे। ऐसा करके वह लोगों की जान तो बचाते ही थे, साथ ही उनका यह कदम इसलिए भी महत्वपूर्ण था कि इससे लोगों के दिलों में जंगली जानवरों के लिए जो नपफरत पैदा हो रही थी, वह खत्म हो सकी थी। चम्पावत नाम का बाघ जिसे उन्होंने मारा था, वह 434 लोगों को मार चुका था।

प्रयास – जिम कार्बेट के अतिरिक्त और कितने नेशनल पार्क हैं देश में।

मेधा – तुम्हें याद नहीं। देश में कुल मिलाकर 92 नेशनल पार्क हैं और 500 wildlife sancturaries हैं।

निशान्त – इन सबका क्षेत्रफल लगभग 160 लाख हेक्टेयर है।

मेधा – क्या यह सभी जगहें पूरी तरह सुरक्षित हैं

निशान्त – हाँ, कोशिश तो यही रहती है वन विभाग की कि यह सभी जगह सुरक्षित रहें और इनमें रहने वाले पशु–पक्षियों को किसी प्रकार का नुकसान न हो।

प्रयास – अखबार में बराबर यह खबरें छपती हैं कि शेर को, हाथी को मार दिया लोगों ने। ऐसा क्यों करते हैं लोग

निशान्त – लालच के कारण। शेर की खाल बहुत मंहगी बिकती है। शेर के दाँत, नाखून, हड्डी तथा दूसरे अंग को भी लोग खरीरदते हैं। हाथी को उसके दाँत के लिए मार देते हैं लोग। इसे Poaching कहा जाता है।

प्रयास – ऐसे लोगों को जंगल में जाने क्यों दिया जाता है

निशान्त – ऐसे लोग रात के समय चोरी–छिपे जंगल में घुसते हैं, या कभी–कभी ज्वनतपेज बन कर चले जाते हैं।

मेधा – क्या जंगल की रखवाली करने वाले नहीं होते

निशान्त – हां होते हैं, पर उनकी संख्या सीमित होती है और उनके लिए बहुत कठिन होता है कि वह जंगल के अन्दर जाने वाले हर एक रास्ते पर नजर रखें या हर जगह की देखभाल कर सकें।

मेघा – क्या उनके पास दूरबीन, वायरलेस इत्यादि नहीं होते

निशान्त – हां होते तो हैं, परन्तु दूरबीन से भी जंगल में कितनी दूर देख सकते हैं। वायरलेस का भी उपयोग तब होता है जब किसी एक व्यक्ति को पता चले कि कोई शिकारी यानि Poacher जंगल में है। पता चलने पर वह अपने दूसरे साथियों को तुरन्त खबर करता है और पिफर शिकारियों को पकड़ने की कोशिश की जाती है। कई बार उनसे मुकाबला भी होता है।

प्रयास – चाचा जी, इन जंगली जानवरों को बचाने के लिए इतना खर्च क्यों किया जाता है इनसे क्या पफायदा है

मेधा – अरे, तुम कैसी बात पूछ रहे हो। क्या इन्हें समाप्त कर दिया जाए

प्रयास – नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था। लेकिन इतना सब करने का पफायदा क्या है

निशान्त (हँसते हुए) – एक फायदा तो यही है कि तुम लोग घूमने जा रहे हो वहां। अगर जिम कार्बेट नेशनल पार्क नहीं होता तो कहाँ जाते घूमने

मेधा भी हंसती है

मेधा – हां चाचा जी, आप ठीक कह रहे हैं। जंगल, पक्षीविहार इत्यादि में घूमने में कितना मषा आता है।

निशान्त – घूमना या पर्यटन तो एक छोटा सा लाभ है। असल जो मकसद है wildlife sanctuary, National Park और Tiger Reserve इत्यादि का वह है इन जीव–जन्तुओं को सुरक्षा देना।

मेधा – इसके साथ ही वहां के वन, पेड़–पौधें तथा दूसरे छोटे–बड़े जानवरों, सभी को सुरक्षा मिलती है।

निशान्त – हां, सही कह रही है मेघा। जब किसी क्षेत्रा को सुरक्षा दी जाती है तो वहाँ की पूरी जैव विविध्ता सुरक्षित हो जाती है।

मेधा – परन्तु चाचा जी इन्हें Tiger Reserve, Project Elephant इत्यादि का नाम दिया जाता है। ऐसा क्यों

निशान्त – बात यह है कि बाघ हमारे देश का गौरव है और सभी लोग यह समझते है कि बाघ, हाथी, बब्बर शेर, गैंडा इत्यादि को सुरक्षा मिलनी चाहिए। जब इनको सुरक्षा मिलती है तो पूरे का पूरा क्षेत्र सुरक्षित हो जाता है।

प्रयास – हां, हमने उस पुस्तक में पढ़ा था कि भारत जैव विविधता के हिसाब से बहुत अधिक महत्व रखता है।

निशान्त – संसार में 19 ऐसे देश हैं जिन्हें जैव–विविधता की दृष्टि से महान देश का दर्जा दिया गया है। भारत इन 19 देशों में से एक है। तुम तो जानते ही हो कि भारत में लगभग 90000 पशु–पक्षियों तथा 49000 पेड़–पौधें की पहचान हो चुकी है और समय के साथ यह संख्या बढ़ सकती है।

प्रयास – क्या नए पेड़–पौधे तथा पशु–पक्षी उत्पन्न हो रहे हैं

निशान्त – नहीं, यह बात नहीं है। एक तरपफ बहुत सारा क्षेत्र देश में ऐसा है जहां अच्छी तरह या बिल्कुल ही अध्ययन नहीं हो सका है। दूसरी तरपफ यह भी सम्भावना है कि जहां अध्ययन हुआ है वहां भी बहुत से पेड़–पौधे तथा पशु–पक्षी ऐसे हो सकते हैं जिनकी जानकारी हमारे पास नहीं है।

मेधा – चाचा जी, इस प्रकार नेशनल पार्क या Wildlife Sanctuary के बनाने से क्या पूरे देश की जैव विविधता सुरक्षित हो जाएगी

निशान्त – नहीं, ऐसा तो नहीं है। अब तक जो क्षेत्र Wildlife Sanctuary तथा National Park के अन्तर्गत है वह लगभग 156 लाख हेक्टेयर है। पूर देश के क्षेत्रफल के हिसाब से यह एक छोटा सा क्षेत्रा है। परन्तु यह भी तो सम्भव नहीं है कि बहुत बड़े क्षेत्र को National Park और ॅildlife Sanctuary इत्यादि का दर्जा दे दिया जाए।

प्रयास – इसमें क्या मुश्किल है

निशान्त – जब किसी क्षेत्रा को National Park या Sanctuary का दर्जा दिया जाता है तो उस क्षेत्रा में बहुत सारे काम बंद हो जाते हैं। ऐसे हर क्षेत्र को बवतम ंतमं तथा Buffar zone में बाटां जाता है। core area में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं हो सकता यहां तक कि उस क्षेत्र में अगर कोई पेड़ स्वयं भी गिर जाए तो उसे हटाया नहीं जा सकता।

मेघा – और Buffar zone में

निशान्त – Buffar zone का प्रबंधन इस प्रकार किया जाता है कि वह उन पशु–पक्षियों के लिए पूरक आवास का काम करें जो core zone से बाहर आ जाते हैं। इस क्षेत्र में कुछ हद तक आबादी है कि वहां से वन उत्पाद तथा दूसरी लाभदायक सामग्री निकाली जा सकती है। परन्तु, वह भी एक सीमा तक और केवल उन लोगों के लिए जो वहा शुरू से रह रहे हैं। व्यापार के लिए नहीं।

मेघा – तो इसमें परेशानी क्या है

निशान्त – समस्या यह है कि लोगों को कृषि के लिए भूमि चाहिए। देश की आबादी बढ़ रही है। बढ़ती आबादी के लिए अधिक मात्रा में हर चीज चाहिए। इसमें मुख्य है भोजन तथा आवास। फिर सड़कों के लिए, रेल लाईन, नहर, बांध बनाने तथा दूसरे विकास कार्यक्रमों इत्यादि के लिए भी अधिक जमीन की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसी स्थिति में अगर बहुत बड़े क्षेत्र को सुरक्षित घोषित

कर दिया जाएगा तो लोगों में यह भावना उत्पन्न होगी कि यह सही नहीं हो रहा है। इसका परिणाम यह हो सकता है कि लोग इन पशु–पक्षियों, पेड़–पौधें इत्यादि को संरक्षण देने के बदले उनके दुश्मन हो जाएँ।

मेघा – चाचा जी, प्रोजेक्ट टाईगर कब शुरू हुआ था

निशान्त – प्रोजेक्ट टाईगर 1973 में जिम कार्बेट नेशनल पार्क से शुरू किया गया था । वहाँ ढिकाला नाम की एक जगह है, उसी जगह से।

प्रयास – उस समय कितने टाईगर रिर्जव बनाए गए थे

निशान्त – उस समय 9 टाईगर रिर्जव बनाए गए थे। उनका कुल क्षेत्रफल लगभग 16000 वर्ग कि.मी. था। अब 28 टाईगर रिर्जव हैं और उनका क्षेत्रफल लगभग 38000 वर्ग कि.मी. है।

मेधा – इससे कितना फायदा हुआ, चाचा जी

निशान्त – 1973 में जो 9 टाईगर रिजर्व बनाए गए थे उनमें लगभग 270 बाघ थे। इस समय जो 28 टाईगर रिजर्व हैं उनमें लगभग 1500 बाघों के होने का संकेत मिलता है।

मेधा – कहने का मतलब है कि क्षेत्रफल लगभग ढाई गुना हुआ है, परन्तु संख्या में पाँच गुना से अध्कि की वृद्धि हुई है।

निशान्त – हां, सही कहा तुमने। इसीलिए प्रोजेक्ट टाईगर को एक सफल कार्यक्रम माना जाता है।

प्रयास – चाचा जी, आप कह रहे थे कि 92 नेशनल पार्क हैं तथा 500 Wild life Sanctuary हैं। इनमें और किन पशुओं को सुरक्षा मिल रही है

निशान्त – हमारे देश में केवल बाघ ही महत्वपूर्ण नहीं है। इसके अतिरिक्त, हाथी हैं, बब्बर शेर अर्थात स्पवद हैं, कई तरह के तेंदुए, पांडा, गेंडे, कई प्रकार के हिरण और कई तरह के बन्दर हैं तथा अनेक प्रकार के पक्षी हैं।

मेधा – जंगली गध भी तो है।

प्रयास – क्या गधें को भी सुरक्षा की आवश्यकता है

निशान्त – हां। गुजरात के कच्छ के क्षेत्र में एक तरह का गधा पाया जाता है। इसे जंगली गधा कहते हैं। वह जाति धीरे–धीरे समाप्त हो रही थी। इसलिए उन्हें भी सुरक्षा की आवश्यकता थी।

प्रयास – लेकिन हिरण तो हर जगह हैं। हम लोग जहां भी गए हैं वहां हिरण ही हिरण दिखाई देते थे।

निशान्त – तुम जिन हिरणों की बात कर रहे हो, वह हैं सांभर या चीतल। यह दोनों हमारे देश में कापफी बड़ी संख्या में हैं परन्तु कई ऐसे प्रकार के हिरण हैं जो केवल कहीं–कहीं पाए जाते हैं और उनके लुप्त होने का खतरा है।

मेघा – हंगुल भी तो ऐसा ही हिरण है।

निशान्त – हां, सही कहा तुमने। इसके अतिरिक्त, कस्तूरी मृग, सांगाई हिरण, चिंकारा, काला हिरण इत्यादि हैं। इन सब की संख्या बहुत कम है तथा यह केवल कुछ जगहों में होते हैं। इन्हें भी सुरक्षा की जरूरत है।

मेधा – परन्तु, तेंदुआ तो ऐसा नहीं है। हर थोड़े दिनों में खबर आती है कि तेदुंए ने किसी को घायल कर दिया या किसी को मार दिया।

निशान्त – देखो, यह जो समस्या है कि तेंदुए या दूसरे जंगली पशु आबादी में या खेतों में आ जाते हैं और वहां नुकसान करते हैं या लोगों पर हमला करते हैं तो यह एक दूसरे प्रकार की समस्या है। यह इस कारण होता है कि हम लोगों ने इन पशुओं के वास स्थान पर कब्जा कर लिया है। जंगलों को काट डाला है और उनका क्षेत्रफल कम कर दिया है। जंगल के बीच गांव बसा लिए या खेती करने लगे। इस सबसे जंगली जानवरों के लिए क्षेत्रा कम हो गया है, उन्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिलता है तथा उनका सामना मनुष्य से अनचाहे हो जाता है। इसलिए वह हमला करते हैं।

प्रयास – क्या इसे रोका नहीं जा सकता

निशान्त – रोका तो जा सकता है, परन्तु केवल कानून से, जोर जबरदस्ती से नहीं। आखिर, सरकार किस तरह हर जगह की देखभाल कर सकती है। लोगों को भी यह समझना चाहिए कि वन तथा वहां उपस्थित पेड़–पौधे, जीव–जन्तु सभी को रहने के लिए जगह चाहिए। केवल मनुष्य के लिए ही यह ध्रती नहीं है। और फिर यह भी तो सोचो कि इन सबके बिना क्या मनुष्य पृथ्वी पर रह सकता है स्वयं उसके अस्तित्व के लिए इन सबका होना आवश्यक है।

मेधा – हां, चाचा जी अगर वन नहीं होंगे तो हमें आक्सीजन नहीं मिलेगी, जल चक्र रुक जाएगा, मिट्टी का कटाव अध्कि होगा, बाढ़ का प्रकोप बढ़ जाएगा और धरती का तापमान भी बढ़ जाएगा।

निशान्त – हां, ठीक कह रही हो तुम मेधा। इसके अतिरिक्त, हमें बहुत सारी चीजें प्राप्त होती है इन वनों से, जिनका उपभोग हम हर दिन करते हैं।

प्रयास – ऐसी क्या चीजें हैं चाचा जी

निशान्त – हम सभी लोगों को देर या सवेर दवाइयों की आवश्यकता पड़ती है। अगर हम इन दवाइयों के विषय में पता करें तो पाएंगे कि इनमें बहुत से औषधीय पेड़–पौधें का उपयोग होता है। बहुत सी दवाइयां ऐसी हैं जिनको बनाया तो जाता है प्रयोगशाला में, परन्तु उन्हें बनाने के लिए जिन पदार्थों का उपयोग होता है, वह पेड़–पौधें से ही मिलते हैं।

मेघा – फिर तो ऐसे पेड़–पौधें के लिए भी खतरा होगा

निशान्त – हां, सही कहा तुमने। इस समय जितनी जड़ी–बूटियां या दूसरे औषधीय पेड़–पौधे हमारे देश में उपयोग में लाए जाते हैं, उनका लगभग 90 से 95 प्रतिशत भाग वनों से प्राप्त होता है। यही कारण है कि अनेक प्रकार के औषधीय पेड़–पौधे ऐसे हैं जिनके विलुप्त होने का खतरा है।

प्रयास – यह पता कैसे चलता है कि कोई पेड़–पौध या जीव–जंतु विलुप्त होने वाला है

मेधा – तुमने प्न्ब्छ के विषय में नहीं पढ़ा था उस पुस्तक में

निशान्त – हां, सही कह रही है मेघा IuCn अर्थात् International Union for Conservation of Nature एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जो इस दिशा में काम करती है। इस संस्था ने कुछ पफार्मूले बनाए हैं यह पता करने के लिए कि किसी जीव को कितना खतरा है। उस संस्था ने 6 वर्गों का निर्धरण किया है। इसमें सबसे ऊपर जो वर्ग है वह है विलुप्त अर्थात Extinct तथा सबसे नीचे है Insufficiently known अर्थात् जिसके बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं है जिससे यह निर्धरित किया जा सके कि उसे कितना खतरा है।

मेधा – हां, iucn, Red Data Book का प्रकाशन करती है। इसमें उन जीवों का वर्गीकरण किया जाता है जिनके विलुप्त होने का खतरा है और उन्हें खतरे के आधर पर अलग–अलग वर्ग में बांटा जाता है। उस संकलन को देखकर यह पता चलाया जा सकता है कि किसी जीव पर खतरा कितना गहरा है।

प्रयास – चाचा जी, क्या हमारे देश में ऐसे किसी जीव का कोई उदाहरण है जो विलुप्त हो चुका है

निशान्त – बहुत ही जाना पहचाना उदाहरण है–चीता। हमारे देश में पाया जाने वाला चीता पूरी तरह विलुप्त हो चुका है। 1949 में अन्तिम चीता मारा गया था।

मेधा – इसके विलुप्त होने का कारण क्या था

निशान्त – एक तरफ वन कम हो रहे थे तो दूसरी ओर उसके लिए उपयुक्त वास स्थल कम हो रहे थे तथा भोजन कम हो रहा था। परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारण यह था कि लोगों ने चीते के शिकार को प्रतिष्ठा से जोड़ दिया। हर जगह बड़ी संख्या में चीते मार दिए गए जिससे अंत में यह विलुप्त हो गयी।

प्रयास – क्या इन्हें चिड़ियाघर में रखकर बचाया नहीं जा सकता

निशान्त – चिड़ियाघर में जानवरों को सुरक्षा जरूर मिलती है, पर चिड़ियाघर में रखकर किसी भी जानवर को बचाया नहीं जा सकता। जानवरों के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने प्राकृतिक वास–स्थानों में रहें, तभी वह स्वस्थ रह सकते हैं। चिड़ियाघर में केवल सीमित संख्या में ही पशु–पक्षी रह सकते हैं, खासकर बड़े पशु। वहां इनके प्रजनन में कठिनाई होगी और अगर उनकी नस्ल बढ़ेगी भी तो पूरी तरह स्वस्थ नहीं रहेगी।

मेधा – आप Inbreeding की बात कर रहे हैं शायद

निशान्त – हां, सीमित संख्या में होने के कारण Inbreeding होगा अर्थात वही सब पशु जो किसी चिड़ियाघर में होंगे, आपस में प्रजनन की क्रिया करते रहेंगे। इससे उनकी नस्ल धीरे–धीर कमजोर हो जाएगी और बीमारियों की संभावना भी बढ़ जाएगी।

प्रयास – पशु–पक्षियों को तो National Park, Wildlife Sanctuary इत्यादि में संरक्षण दिया जाता है। पेड़–पौधें के लिए क्या किया जाता है

मेधा – उनके लिए भी संरक्षण की व्यवस्था अवश्य होगी। है ना चाचा जी

निशान्त – हां, ऐसा ही है। एक तरफ जब हम वन तथा दूसरे क्षेत्राों जैसे झील, तालाब, मरूस्थल, समुद्री क्षेत्र इत्यादि को संरक्षण देते हैं, वहां उपस्थित पशु–पक्षियों के लिए तो उस क्षेत्र की पूरी जैव विविधता को संरक्षण मिलता है। उसमें वहां उपस्थित पेड़–पौधे भी शामिल होते हैं। यही कारण है कि ऐसे क्षेत्र में या तो बिल्कुल ही हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए या अगर हो भी तो कम से कम।

प्रयास – औषधेय पौधें के लिए अलग से भी कुछ हो रहा है। मैंने किसी पत्रिका में पढ़ा था।

निशान्त – हां, वनों में जहां औषधेय पौधे अध्कि हैं, उन्हें औषधीय पौधें के संरक्षण के क्षेत्र के रूप में पोषित किया जाता है। ऐसे क्षेत्रा से केवल त्मेमंतबी अर्थात शोध तथा उन पौधें की नस्ल को बढ़ाने के लिए ही पौधें को निकाला जा सकता है। व्यापार के लिए बिल्कुल नहीं। इस प्रकार औषधीय पौधें को संरक्षण मिलता है।

मेधा – औषधीय पेड़–पौधें की खेती पर भी तो जाोर दिया जा रहा है।

प्रयास – खेती से पेड़–पौधे कैसे बचेंगे।

निशान्त – मेध ठीक कह रही है। खेती से होगा यह कि जंगल में उगने वाले औषधीय पेड़–पौधें पर दबाव कम होगा। जब लोगों को खेतों से वही सब मिल जाएगा जो वह जंगल से लाते हैं तो जंगल से लाने की आवश्यकता कम हो जाएगी। इस कारण जंगल में उपस्थित पेड़–पौधे बच जाएंगे।

मेघा – वैसे ही जैसे हम अपने घरों के आस–पास खेत के मुंडेर पर या खाली षमीन पर पेड़ लगाते हैं तो जंगल के पेड़ बचते हैं।

प्रयास – चाचा जी, क्या नेशनल पार्क तथा Wildlife Sanctuary के अतिरिक्त भी कुछ और कार्यक्रम चल रहे हैं जैव विविधता को बचाने के लिए

निशान्त – हाँ, और भी कई प्रकार के कार्यक्रम चल रहे हैं, एक कार्यक्रम है Biosphere Reserve का। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बड़े–बड़े क्षेत्र को Biosphere Reserve के रूप में मान्यता दी जाती है। अब तक 13 Biosphere Reserves घोषित किए जा चुके हैं अपने देश में।

प्रयास – क्या इन त्मेमतअमे में हर तरह के कार्यक्रम बंद कर दिए जाते हैं

निशान्त – नहीं, ऐसा नहीं है। ऐसे Reserves में पाए जाने वाले संसाधनों का उपयोग तो होता है, परंतु इस तरह कि वह संसाध्न समाप्त नहीं हो जाएं बल्कि आगे के लिए भी उपलब्ध रहे।

मेधा – अर्थात् Sustainable Development हो सके उस क्षेत्रा में।

निशान्त – विकास को रोका नहीं जाता, परन्तु विकास इस तरह हो कि वह लंबे समय तक चल सके और संसाध्नों की कमी भी न हो।

मेधा – आप कह रहे थे कि देश में ऐसे 13 ठपवेचीमतम त्मेमतअमे हैं। इसका चयन किस तरह होता है

निशान्त – Biosphere Reservè का चुनाव इस बात को ध्यान में रखकर किया जाता है कि पृथ्वी पर मौजूद सभी तरह की प्रमुख पारिप्रणालियों (ईकोसिस्टम) को इसके दायरे में लिया जाए, चाहे

वह ध्रती पर हो या समुद्री तट के क्षेत्रा में। मुख्य उद्देश्य होता है कि उस ईकोसिस्टम में पायी जाने वाली Biodiversity सुरक्षित रह सकें, विकास के साथ।

प्रयास – Biosphere Reserves कहां–कहां हैं

निशान्त – कुल 13 हैं। इनमें सुन्दरवन, नंदा देवी, नीलगिरी, मयनमार की खाड़ी इत्यादि ऐसे हैं जिनके बारे में तुमने जरूर सुना होगा।

मेधा – चाचा जी, दूसरे कौन से कार्यक्रम हैं जैव विविध्ता के संरक्षण के लिए।

निशान्त – इनके अतिरिक्त, Wetland conservation Programme है। Mangrove protection का कार्यक्रम है, Coral reefs के संरक्षण का कार्यक्रम है। Botanical Garden हैं।

मेघा – इन सब के कारण हमारे देश की जैव विविधता को पूरी सुरक्षा मिल रही होगी

निशान्त – हां, काफी हद तक। परन्तु, इन सबके अतिरिक्त यह आवश्यक है कि हम सब लोग अपने आस–पास उपस्थित जैव विविध्ता को संरक्षण दें।

प्रयास – वह किस तरह

मेधा – अरे, हमारे घरों के आस–पास भी तो अनेक प्रकार के पेड़–पोधे तथा पशु–पक्षी होते हैं।

निशान्त – हां, सही कह रही है मेघा। हमारे आस–पास ही अनेक प्रकार के पेड़–पौधे तथा पशु–पक्षी होते हैं। हमें उनका महत्व समझने की कोशिश करनी चाहिए और उन्हें बचाने में योगदान देना चाहिए।

प्रयास – चाचा जी, वह नदी कौन सी है

निशान्त – अरे, बातों में पता ही नहीं चला, हम लोग जिम कार्बेट नेशनल पार्क के पास पहुँच गए हैं। यह नदी है रामगंगा। यह नदी जिम कार्बेट नेशनल पार्क से होकर गुजरती है।

मेधा – इसके अतिरिक्त भी तो नदियां हैं इस क्षेत्रा में

निशान्त – हां, इसके अलावा यहां कई छोटी–छोटी नदियाँ हैं तथा बड़ी संख्या में स्रोत हैं। इन सबके कारण यहां पूरे साल पानी रहता है और यहां जंगली जानवरों के अतिरिक्त, पानी में पाए जाने वाले पशु भी होते हैं। मछलियां भी होती हैं यहां।

मेधा – और वह मैदान जैसा क्या है

निशान्त – इन्हें चौर के नाम से जाना जाता है। यह Savannah grassland है अर्थात् घास के मैदान। इनके कारण हिरण, हाथी, नीलगाय, सांभर, खरगोश और अनेक प्रकार के शाकाहारी जानवरों को पर्याप्त मात्राा में भोजन मिलता रहता है।

प्रयास – यहां तो पहाड़ भी हैं

निशान्त – हां, यहां ऊँचे पहाड़ भी हैं और इसी कारण यहां कई प्रकार के वन देख सकते हो तुम लोग। निचले भाग में अध्कितर 'साल' यानि सखुआ के जंगल मिलेंगे तो ऊपर पहाड़ों पर चीड़ तथा दूसरे तरह के Gymmosperm जाति के पेड़ मिलेंगे।

मेधा – इसका मतलब है कि जिम कार्बेट में हम लोग बहुत कुछ देख सकते हैं। क्या बाघ दिखेगा

निशान्त – यह तो बिंदबम की बात है। इतना बड़ा क्षेत्रा है और बाघों की संख्या सीमित है। परन्तु निराश होने की जारूरत नहीं है। बाघ के अतिरिक्त भी अनेक तरह के जानवर तुम्हें मिलेंगे। हाथी भी दिखता है, यहां आसानी से। अगर किस्मत अच्छी रही तो बाघ भी दिखाई दे सकता है।

मेधा – अगर उसे पता चलेगा कि प्रयास यहां आया है तो षरूर दिखेगा।

(सब हँसते हैं। गाड़ी रूकने की आवाष।)

प्रयास – यह क्या है

मेधा – अरे भूल गए! यह चैक–पोस्ट है। यहां यह जाँच की जाती है कि अंदर जाने वाले कोई गलत काम करने तो नहीं जा रहे हैं। उनके पास कोई अस्त्रा–शस्त्रा इत्यादि तो नहीं हैं।